मिथिलेश्वर के उपन्यास 'यह अंत नहीं' में जातीय संघर्ष

स्नेहलता शर्मा
शोधार्थी
सी एच एम कॉलेज, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।

सारांश

मिथिलेश्वर उन कथाकारों और उपन्यासकारों में से एक हैं जिनका सम्पूर्ण साहित्य गांवों के इर्द - गिर्द ही घूमता है। मिथिलेश्वर जी का जन्म ही एक ऐसी जगह पर हुआ था जिसके बारे में मिथिलेश्वर ने स्वयं एक स्थान पर लिखा है। "मैं आपको बता दूँ मेरा जन्म भोजपुर जिले के एक ऐसे इलाके में हुआ है,, जो चोरो डकैती , लूटपाट मनमानी और ज्यादती को लेकर पूरे जिले में मशहूर है। इस इलाके में कोई भी बात जो पहले लाठी के सहारे तय की जाती थी , अब बंदूक की नोक पर तय की जाती है। पता नहीं क्यों बचपन से अपने इलाके के अत्याचार- - अनाचार,, जुल्म सितम, शोषण, अन्याय को मैं सहन नहीं कर पाता था"। मिथिलेश्वर ने इसीलिए गाँवों के जीवन को आधार बनाकर अपना साहित्य लेखा है । उनके साहित्य में गांव के कुछ लोग हैं जो जैसे---तैसे अपना जीवन जीने को बाध्य है तो कुछ समाज में फैली असमानता को अस्वीकार करने की हिम्मत दिखा रहे है और इसी जातीय संघर्ष को शोध - विषय बनाया है।

मुख्य शब्द: *बड़टोली, अन्याय, नन्हटोली, हत्या, अपहरण, समझौता, बर्दाश्त, आदि*

१. प्रस्तावना

मिथिलेश्वर ग्रामीण परिवेश के एक समर्थ उपन्यासकार हैं। 'यह अंत नही' उनका चौथा उपन्यास है । 'यह अंत नही' शीर्षक के माध्यम से लेखक ने गाँव एवं गाँव से जुड़ी समस्याओं का बड़ा ही सजीव व रोचक वर्णन किया है। बिहार राज्य की पृष्ठभूमि में अगड़ी - पिछड़ी जातियों के संघर्ष को बड़टोली और नन्हटोली के नाम से चित्रित किया है, इस उपन्यास में वर्ग संघर्ष नहीं, वर्ण संघर्ष अपने चरम पर दिखायी देता है ।

सम्वेदनशील लेखक ने अगड़ी व पिछड़ी जातियों के खान -पान, रहन - सहन, शिक्षा - दिक्षा , संस्कार व संस्कृति का वर्णन यथार्थ के धरातल पर किया है । जीविकोपार्जन के मामले में बड़टोली और नन्हटोली के कार्यक्षेत्र भिन्न थे । बड़टोली के लोगों की जीविका के मुख्य स्रोत उनके खेत थे, मगर नन्हटोली के लोगों की जीविका रोज - मज़दूरी , बनिहारी - चरवाही और अपने जातिगत पेशे पर अवलंबित थी । बढ़ई, कुम्हार, नाई, धोबी , डोम, चमार , कानू , दुसाध , पासी , ग्वाला आदि जातिगत पेशे से ही वे जीते थे । बड़टोली में प्रायः सभी खेतीहर थे । यह बात दूसरी थी कि किसी के जिम्मे पचास बीघे , तो किसी के जिम्मे बीस बीघे , तो किसी के जिम्मे पाँच बीघे ही , लेकिन सबके जिम्मे कुछ - न - कुछ खेत थे ही ... | इसके विपरीत नन्हेटोली के अधिकांश लोग भूमिहीन थे । कुछ लोगों के पास थे भी तो दो - चार बीघे से अधिक नहीं । खेतों की तरह घरों के मामले में भी उनकी भिन्नता स्पष्ट थी । बड़टोली के पाँच - सात घरों को छोड़कर सारे घर पक्के थे । कुछ घर तो प्लास्टर और पोताई से शहर के घर जान पड़ते थे । जो घर प्लास्टर हीन थे वे भी पक्की ईटों की जोड़ाई और कंकरीट छत वाले ही घर थे,

जबकि नन्हेटोली के अधिकांश घर कच्ची मिट्टी की दीवारों और खपरैल छत वाले घर थे । वैसे नन्हेटोली के सम्पन्न लोगों ने भी अपने कच्चे घरों के स्थान पर पक्के घरों का निर्माण शुरू करा दिया था ।

'यह अंत नहीं ' कथानक के अवलोकन से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि यह कथानक दो गाँवों खवासडीह और रघुनाथपुर के बीच का है। दोनों गाँवों में अमीर - गरीब, बड़जतिया व छोटजतिया रहते हैं । बड़जतिया की तरफ से अन्याय, अत्याचार, बलात्कार हमेशा से किया जाता रहा है । गरीब छोटजतिया वर्ग के लोग पहले सह लेते थे । लेकिन आज़ादी के बाद अब इनमें भी चेतना आ गयी है । शिक्षा, संगठन व संघर्ष के माध्यम से वे अब हर प्रकार के अन्याय, अत्याचार व जुल्म का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये हैं ।

पहले गरीब - कुचले वर्ग की स्त्रियाँ प्रतिकार नहीं करती थी, लेकिन अब वे प्रतिकार करने लगी हैं । श्रवण का बेटा अगम जब चुनिया के साथ जोर - जबरदस्ती करना चाहता है, तो वह उसका प्रतिकार करती है- " का कहा? हम झूठ बोली है? तू हमारी इज्जत बर्बाद करना नहीं चाह रहा था ... चोरी और सीना जोरी दोनों ... अभी हमार खीस खतम नहीं हुई ... तोहरा के बिना मर ले हमारी खीस नहीं बुझेगी और चुनिया अगम की ओर झपटी ।

इसी प्रकार जब बड़टोली के लड़कें चुनिया के घर में घुसते हैं, तो चुनिया और बन्तु उन्हें मारते हैं । बन्तु ने तो उसे गोली मार दी थी । इस गाँव में रहते हुए वे यह अच्छी तरह जान चुके थे कि " सम्पन्न खेतीहर के घर चोरी धन के लिए होती थी तथा बनिहर - चरवाह के घर उनकी बहन, बेटी तथा पत्नी की आबरू के लिए । पर वे विवश थे ।"

नन्हजतिया के लोग चुनाव भी लड़ने लगे हैं और जातीय आधार पर संगठित रूप से वोट देकर अपनी जातिवालों को जिताना भी सीख गये हैं । इस उपन्यास का ललन श्रवण के सहयोग से गाँव का मुखिया बन जाता है । वह दलित , दमित ललन चुनाव जीतने के बाद ब्लॉक के बी.डी.ओ. और थाने के दरोगा के सामने कुर्सी पर बैठकर बातचीत करता है । सरकार से प्राप्त राशन आदि का वितरण उसकी देखरेख में होता है । गाँव के स्कूल में पढ़ाई का निरीक्षण भी वही करता है । गाँव के लोगों को गाँव से सम्बन्धित कोई भी प्रमाणपत्र उसी के हस्ताक्षर से जारी होता है । मुखिया के पद का प्रभाव और महत्त्व वह समझने लगा है । उनकी यह समझ जैसे - जैसे बढ़ती गयी थी , वैसे - वैसे उसके अन्दर श्रवण सिंह की पकड़ से निकलने की छटपटाहट भी तेज होती गयी थी ।

पहले बड़ीजात वाले छोटीजात वालों को मारपीट देते थे, गाली - गलौच करते थे, तो वे चुपचाप सह लेते थे, अब ऐसा नहीं है । वे सीधे थाने में एफ.आई.आर. दर्ज करा देते हैं । संगठित होकर अधिकारी के सामने जुलूस भी निकालते हैं । पहले इस पिछड़े वर्ग के लोग पढ़े - लिखे नहीं थे, तो सरकारी नौकरी में भी नहीं आते थे । अब ये लोग पढ़ - लिखकर आरक्षण का लाभ लेकर सरकारी नौकरी में भी आने लगे । पहले सरकारी कर्मचारी इन लोगों की उपेक्षा कर देते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं होता ।

अब छोटी जात के लोग चुनाव में खड़ा होकर संख्या बल से चुनाव भी जीतने लगे हैं । एक गाँव के लोग दूसरे गाँव के अपने भाई - बिरादर को सहयोग भी करने लगे हैं । इन सबकी एकता को देखकर श्रवण सिंह को अब इस सत्य का एहसास भी हो गया था कि, "आदमी बाहर से पराजित और कमजोर तभी होता है जब अपने बीच आपसी तालमेल खो देता है और अंतर्कलह का शिकार हो जाता है । " यही अंतर्कलह किसी भी जाति , परिवार , समाज व गाँव को तोड़ देता है ।

इधर ललन को प्राप्त अप्रत्याशित सफलता ने कहरटोली के लोगों को जैसे सोते से जगा दिया था । वे एकजुट होने और सोचने - समझने के लिए बाध्य हो गये थे । बड़टोली के लोगों की आँख बचाकर रात के अँधेरे में बैठकें करने लगे थे । उनकी राय लगभग एक जैसी होती- " अब हमेशा के लिए हमें भाँति एक बनकर रहना है । हम आपस में जुट - सटे रहेंगे इसी में हमारी भलाई है । हम एक बने रहेंगे तो कोई हमारा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा । अगिला चुनाव भी फिर ऐसे ही ललकारकर जीतना है । बड़टोली के लोग बहुत दिनों तक गाँव पर राज किये, अब हमन की बारी आयी है । "

बाहरी लोग आकर कहरटोली के लोगों को मंत्रणा दे जाते- "अपने हक एवं अधिकार के लिए लड़ने और मर - मिटने से भी पीछे नहीं रहना है । वर्षों की गुलामी की जंजीर तोड़ देना है । जब हम मरने - मारने पर उतारू हो जाएँगे तो हमारा हक कोई रोक नहीं पाएगा । 'यह अंत नही ' में मिथिलेश्वर ने समकालीन बिहार के गाँवों में जारी जातीय संघर्ष, अराजकता , हिंसा , अपहरण , बलात्कार आदि का बडे पैमाने पर , समाज के पिछड़े और दलित वर्ग को पूरी सहानुभूति प्रदान करते हुए , चित्रण किया है ।

२. निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि मिथिलेश्वर ने ग्रामीण जीवन के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न जातीय समस्याओं और दशाओं को करीब से देखा ' ही नहीं भोगा भी है और वही सब उन्होंने अपने अलग-अलग उपन्यासों के चरित्रों के माध्यम से हम सबके सामने प्रस्तुत किया है । 'यह अंत नहीं ' में मिथिलेश्वर ने समकालीन बिहार के जातीय संघर्ष, हिंसा, अराजकता, अपहरण, बलात्कार आदि का बड़े पैमाने जारी पर समाज के पिछड़े और दलित वर्ग को पूरी सहानुभूति प्रदान करते हुए चित्रण किया है। आजादी के लंबे समय के बाद भी उक्त समस्याओं का समाधान नहीं हो पाया है।

संदर्भ सूची

१.यशपाल पुरस्कार - उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा निर्णय कहानी संग्रह के लिए, सन् १ ९८१-८
२.साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर, पृ. १०७
३.साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर, पृ. ९ ५
४.साहित्य की सामाजिकता, मिथिलेश्वर, पृ. १५५
५.यह अंत नहीं, मिथिलेश्वर, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्कारण २०१३ पृ. ८
६.वही, पृ. १५
७.वही, पृ. १५
८.वही, पृ. १५३
९.वही, पृ. २८१
१०.वही, पृ. ३३२-३३३
११.वही, पृ. ३८ ९